International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 18-06-2020; Accepted: 05-07-2020; Published: 19-07-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 45-48

हयात ए औरत: चिलचिलाती धूप में एक लम्बा सफ़र

Manu
Professor, See Sankaracharya University, Kalady, Kerala, India

प्रस्तावना

साहित्य के जन्म के साथ नारी साहित्य का अटूट हिस्सा बनकर आई है। मगर सवाल यह है कि सर्जना के विशाल संदर्भ में समय-समय के साहित्यकारों ने अपनी अपनी रचनाओं में नारी को कैसे-कैसे चित्रित किया है ? ऐसा क्यों चित्रित किया है ? तलब बहुत आसान है, जवाब भी बहुत आसान है । उस समय समाज में नारी की जो हालत है, उसका जो माहौल है और जिस तरह वह अपना जीवन बिता रही है उसके मुताबिक ही आमतौर पर साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में नारी का सृजन किया होगा और सामाजिक बातों से बढ़कर शायद कुछ सृजनकारों ने कुछ सीमा तक अपनी जो नारी संकल्पना है उसके मुताबिक कुछ काल्पनिक किरदारों का भी चयन किया होगा, इसमें कोई संदेह नहीं है।

आदिकालीन साहित्य में नारी का आदर किया जाता था । उसकी इज्जत की जाती थी। बस वह देवी के रूप में हमारे सामने मौजूद थीं। तालीम की जो देवी है वह सरस्वती है। तालीम की देवी नारी होकर भी नारी को तालीम नहीं मिल जाती है । यह नादिरतरीन बात है । लेकिन वक्त के गुज़रान में भक्ति काल तक पहुंचते-पहुंचते वह भोग की चीज बन जाती है । यह कैसे ? यह इतिहास का सवाल जवाब है, समाज का भी। साहित्य में नारी के सभी तरह के माहौल का बयान किया जाता है। 'मोक्ष' पुरुष को मिल जाता है, नारी को नहीं, नारी को मोक्ष मार्ग की माया के रूप समझा जाता है। आदिकाल में नारी देवी है, भक्ति काल में वह माया बन गयी, रीतिकाल कामिनी। आधुनिक काल में नारी के हाल में बहुत बड़ी तरक़्क़ी आई, वह कहीं देवी है, कहीं माया है , कहीं मस्त चीज है , वैसे ही नारी के कई रूप एक साथ उभर कर आये हैं। पहली बार नारी तबका आर्थिक तौर पर अपने पैर पर खड़े होने लगा है। यह आज भी उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। नारी की हालत को मरकज़ में रखकर लिखनेवाली नारियाँ भी आज साहित्य के मैदान में आयी हैं। यह भलाई का निशाना है। पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव उन नारी साहित्यकरों केलिए ज़रूर ही ऊर्जा बनी है । हिंदी दुनिया की कुछ नारी साहित्यकारों के नाम यहाँ क़ाबिल ए ज़िकर हैं।

आधुनिक हिंदी साहित्य में महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान आदि से नारी साहित्यकारों की कतार शुरू होती है, फिर यह कतार शकुनतला माथुर, मोना गुलाटी, ममता कालिया, इंदु जैन, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, प्रभा खेतान, उषा प्रियंवदा, मृणाल पांडेय, निरुपमा सोबती, मंजुल पुष्पा, कात्यायनी आदि से होकर आगे बढ़ती जाती है। जैसे नारी साहित्यकारों की कतार लंबी है। फिर कतार यों बढ़ जाती है नासिरा शर्मा, मृणाल पाण्डे , मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा , शिवानी, सुमन राजे, कृष्णा अग्निहोत्री, अनामिका, , अलका सरावली आदि। ज़रूर ही यह फेहरिश्त अधूरा है। इन सब की अपनी अपनी अलग अलग पहचान है। वैसे ही मन्नु भंडारी की भी।

हर दौर में नारी की जो हालत है, उसका हक़ीक़ी बयान ही हुआ करता था। आज़ादी के बाद कहानी के मैदान में नारी सोच की रफ्तार में काफी तरक़्क़ी हुई। हिंदी के 'नयी कहानी आंदोलन' में मन्नू ने अपनी भूमिका अव्वल दर्जे में किया। मन्नू की दस्तानों की मरकज़ में ख़ास कर औरतें ही रहीं। आज़ादी क़े बाद की औरतों की याद करती हुई मन्नूजी कहती है " ग्रामीण भारत की सब से बड़ी आर्थिक गतिविधि कृषि है और आज तक महिलाओं को किसान के रूप में मान्यता तक नहीं मिली है। "(1) बावर्ची खाने की चाहर दीवारी के भीतर उसकी ज़िन्दगी सिमट गयी थी, मगर सामाजिक बदलाव की खबरों से वह परिचित थी। वतन को आज़ादी तो मिली है मगर वतन की औरतों की आज़ादी पर्दे के पीछे ही रही। भारत गावों में बसता है। इसमें कोई शक नहीं होगा कि हमारा किसान ही हिन्दुस्तान है। हिन्दी ज़बान ने भी खूब बेरहमी से नारी के साथ बेवफाई दिखाई है; क्योंकि गावों में किसान के साथ चिलचिलाती हुई धूप में काम करने वाली महिला औरती किसान केलिए एक लफ्ज़ हिन्दी ज़बान में नहीं है। घर के काम के साथ, बावर्ची खाने के साथ, आह्ते के कामों के साथ पसीना बहाकर खेतीबाड़ी के लिए निकलनेवाली औरती किसान के लिए अभी तक कोई मान्यता नहीं मिली है, बस उससे हमदर्दी दिखानेवाले/वाली साहित्यकार ने भी उसकेलिय एक अलग एक लफ्ज़ नहीं दिया है। हमें मालिक और मालिकिन है, मर्द और औरत है, नौकर और नौकरानी है,मज़दूर और मजदूरिन है। मगर किसान के लिए कोई मुवन्नस शब्द नहीं है। किसान के लिए इस्तेमालशुदा कृषक, भूमिपुत्र, हलधर, खेतिहर, काश्तकार सब अलफ़ाज़ मुसकर है। सारे कमज़ोर मेरी दलित है । इसलिए कोई भी कामकाजी व राजनैतिक औरत कभी भी दलित नहीं है। दलित की बुनियाद मैं अर्थ से नापता हूँ। किसी के कौम, मज़हब, वेश भूषा, भाषा कुछ भी हो, क़ीमत ए ज़िन्दगी ही ज़िन्दगी का अर्थ बता पाये, यानी अर्थ ही अर्थ बता पाये। काश्तकार खेती बाड़ी करके संयुक्त परिवार में अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते थे। शहरीकरण व औद्योगीकरण ने सिर्फ संयुक्त परिवार को ही न थोड़ा बल्कि निज़ाम ए काश्त को भी बर्बाद किया। संयुक्त परिवार में रहते हुए लोगों ने एकता व प्यार की अहमियत जान ली थी। उनमें सांझा

करने व सबर करने की ताक़त थी । अणु परिवार की पैदायशी ने स्वार्थता को खूब आगे बढ़ाया। परिवार में तनाव के बादल फैलने लगे । दबाव बारिश बनकर बरसने लगा। अर्थ के कसर का तीखा हमला होने लगा। नाचीज़ बातों को लेकर घर में झगड़ा पैदा होने लगा। साथ ही साथ घर कई मसाइलों का खेमा बन गया। वहां नारी को जंगली आग में पड़े परिंदे के सामान जलना पड़ता है । कल्पना शर्मा से हुए अपने साक्षात्कार में मन्नू जी ने अपने दिल की बात यूं कह डाली कि " मेरा मानना है कि स्त्री को परिवार भी चाहिए और बच्चे भी चाहिए। परिवार निरपेक्ष, मातृत्व निरपेक्ष स्त्रीत्वा का कोई महत्व नहीं है। " (2)

पितृत्व और मातृत्व दोनों परिवार केलिए बहुत ही ज़रूरी बात है। मन्नू जी केलिए माँ देवी के सामान वह पूजा के क़ाबिल है । 'रानी माँ का चबूतरा', 'रेत की दीवार ' आदि दस्तानों की 'रानी' और 'चंदा' आदि मातृत्व की परम मूर्ति हैं । 'मजबुरी' कहानी में गांव के भोलेपन और भलाई को दिखाने केलिए मन्नू जी ने रामेस्वर का सृजन किया हैं । शहरी संस्कृति में माँ अपने बच्चे को नकली दूध पिलाती है तो गांव की माँ जितना हो सके उतना अपना दूध ही पिलाएगी। " बेटे का पालन पोषण अपना धर्म मानकर "दो साल तक उन्होंने रामेस्वर को अपना दूध पिलाया था। उसके बाद गिलास से पिलाती थी। " (3) दूसरी ओर कहानीकार ने यह भी दर्शाया है कि उसकी बहु रमा मातृत्व को बोझ मानती है। घुटन कहानी में एक अलग माँ की तस्वीर खींची गयी है।'मोना ' की माँ बच्चे की देखभाल को अपना फ़र्ज़ नहीं मानती है। बेटी की कमाई छूट जाने के डर से उसकी शादी उसके प्रेमिका के साथ भी नहीं करने देती है। अपनी दूध पीनेवाली बच्ची को छोड़ कर किसी दुआरे आदमी के साथ भाग जानेवाली विधवा माँ का सृजन 'संख्या के पार' नामक कहानी में किया है। बच्ची को छोड़कर जाना ज़रूर ही मातृत्व का टुकराव है,कसूर भी है। परिवार में माँ के रूप में क्या करना है क्या न करना है ? यह नारी अपने माहौल से सीखती है, पढ़ाई से सीखती है। कुछ ऐसी माँ होती हैं, पहले बेरहमी से व्यवहार करेगी, बाद में प्रायश्चित से रो पड़ेगी । ऐसी एक माँ का जिक्र मन्नू जी ने 'सयानी बुआ' के माध्यम से किया है।

पहला स्कूल घर है, पहला टीचर माँ है। माँ ही बच्चों की ज़िन्दगी को सजा सकती है, सँवार कर सकती है। जदीद दौर की कई माँ इससे दूर रहकर जीती है। इसलिए माँ बेटी के बीच में झगड़ा पैदा हो जाता है। 'अंकुश' कहानी यही बता देती है। 'त्रिशंकु ' कहानी के ज़रिये मन्नू जी बताना चाहती है कि खूब कोशिश के बावजूद भी प्रगतिशील विचारों के सात हम सफर नहीं कर पायेंगे। परंपरा को तोडना बहुत ही मुश्किल बात है। 'तनु' इसी सोच विचार की नुमाइंदा किरदार है।

पत्नीत्व और मातृत्व के बीच में जो संघर्ष है, वह नारी को खतरे की खाड़ी में धकेल देती है। शादी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी मोड़ है मोड़ के उस पार के मंज़र के बारे में किसी को भी कोई पता नहीं । शादी का पहला बाब पत्नीत्व है और दूसरा मातृत्व है । इस मामले से तालूक रखने वाली अपनी एक नज़्म यहाँ मैं कबीले जिक्र समझता हूँ

" चिलचिलाती धूप में ज़िन्दा एक औरत की याद में "

' 'दाने दाने पर लिखा है / खाने वाले का नाम' / मगर मेरी नसीब में तेरा नाम ना लिखा है / ज़िन्दगी मोड़ों से भरी हुई एक राह है / बीच बीच में ऊबड़ गाबड़ / ज़मीन भी दिखाई देगी / सफर आसान नहीं है / मुश्किलतरीन है / राह से राहत ना मिल जाये / क्योंकि हर मोड़ पे ख़तरा बैठा हुआ है / ज़िन्दगी की मोड़ों में / सब से बड़ी मोड़ शादी की है / यह U.टर्न तरह है / मोड के उस पार की मंजरों के बारे में / किसी को भी / कोई पता नहीं है /

शादी के बाद / बहू का सफर / ससुराल की तरफ है / ससुराल का / और एक माना है / जेल या कैदखाना / यह सुनके कोई / बेहोश ना हो जाए / मायके की खुली / आजादी से / ससुराल की तरफ के / सफर में सब शाद ही होंगे । ससुराल / पति के पिता का घर है / मगर पति के पिता के घर में / शासन सास का है / इसलिए ही हिन्दी ज़ुबान ने / ससुराल को स्त्रीलिंग में रखा है। यह ज़बान में कभी कभी दिखाई देनेवाली / gynocentrism की / नादिरतरीन मिसाल है। ज़िन्दगी की चिचिलाती धूप में / एक औरत की शादी का सफर खूब अजीब है / सफ़र के बीच बीच में / आने वाली मोड़ें भी खूब अजीब हैं / शादी भी अजीब है / रिश्ता भी / मगर मौत के सामने सब बराबर है।

शहरीकरण, औद्योगीकरण , बाज़ारीकरण, वैश्वीकरण आदि ने मातृत्व पर करनेवाली योरिश की बात माँ कैसे-कैसे, कैसे-कैसे सबर कर लेती है । घर छोड़कर नौकरी की तलब में शहर, देश व विदेश जानेवाले बेटों व पतियों की तादाद में काफी इज़ाफ़ा हुआ है। घर छोड़कर शहर, देश व विदेश जानेवाले बेटे की याद में तड़पती माँ के दिल कौन पहचान कर पाते हैं ? पति द्वारा बर्खास्त पत्नी के दिल में बेटे के दूर जाने पर होनेवाले डर को दिखाने वाली रचना है 'आप का बंटी'। यह इसकी जीती जागती मिसाल है। " शकुन को पति ने छोड़ दिया था तो उसका पूरा भरोसा अपने बेटे पर है। फिर भी अकेले होने का डर शकुन के दिल में उभर उभर कर आता है कि बेटा भी पति के सामान छोड़कर कभी भी कहीं भी ना जाये। " अच्छा बता तू मेरे लिए इतना सब करेगा, बड़ा होकर या कि निकल बाहर करेगा हटाओ, बुढ़िया को बोर करती है। " (4) इसलिए शकुन बेटे के बचपन की शरारतों को दूरकर उसे समझदार बनाने की भरसक कोशिश करती है।

शादी के बाद औरत में पत्नीत्व तीखा होगा। मगर जब बच्चा पैदा होगा, तब औरत के भीतर पत्नीत्व और मातृत्व के बीच जमकर जंग पैदा हो जाएगा। मामूली तौर पर देखा जा सकता है कि मातृत्व के सामने पत्नीत्व घीरे घिरे हार जाता है और घर में पति पत्नी के बीच जमकर जंग पैदा हो जाता है । यह कम या ज़्यादा रूप में हर घर में होता है। औरत का झुकाव पति से ज़्यादा बच्चे की तरफ़ बढ़ जायेगा । पति से पत्नी का ऊब जाना घर में नयी समस्याएँ पैदा कर लेता है। कानूनी तौर पर तलाक़ हो जाने पर मातृत्व के दिल के बदला लेने का तीखेपन ज़रूर ही घीमा हो जाएगा। आर्थिक परेशानियों की वजह या दूसरे किसी सबब से किसी और मर्द से कशिश हो जाना भी मामूली बात है। वहाँ एक बार फिर पत्नीत्व ताक़त हासिल कर देता है और मातृत्व घीमा पड़ जाता है।'आप का बंटी' की शकुन इसकी नुमाइंदा किरदार है। पति से तलाक ही जाने पर एक परिचित आदमी की तरफ वह कशिश हो जाती है। इसका नतीजा यह हुआ कि अपने प्यारे बेटे के प्रति जो प्यार और वात्सल्य थे। ये गुमसुम होने लगे। जब बेटा नए पति को स्वीकारने केलिए ना तैयार हो जाता है तो शकुन केलिए अपना प्यारा बेटा बोझ बन जाता है।

आर्थिक कामयाबी के बावजूद भी अगर कोई औरत मां ना बन सकी तो उसे मन्नू जी औरती ज़िंदगी की बे कामयाबी की फ़ेहरिस्त में ही जोड़ती है। उनके मतानुसार मां बनना ही औरत की जीत है। 'जीती बाजी की हार' रचना के जरिए मन्नू जी यही बताना चाहती है।

पत्नी केलिए भारतीय परम्परा में पति परमेश्वर है। फिर भी परमेश्वर से उसे मारखाना पड़ता है। सब कुछ सहन के जिये तो वह आदर्श पत्नी बन जायेगी। 'नशा' कहानी 'आनंदी' इसी नजर पर जरूर ही आदर्श नारी है। वह मजदूरी करके पति को शराब पीने केलिए पैसा देती है। पति का कहना सुनकर शायद उसे भी खुशी मिल जाती है। वह पति के शोषण के तरीके को समझ ना पाती है। ' तेरी जैसी सती नार का भगवान जरूर भला करेगा आनंदी !,.....ऐसी औरत के साथ तो भगवान भी दुश्मनी नहीं निभा सकता।" (5)

परंपरा की कड़ी को तोड़ना नारी तबके केलिए पहाड़ काटने का काम होता है। जब तालीम हासिलशुदा पत्नी पति के ज़ुल्मो सितम पर आग बबूला हो जाती है तो नारी ही नारी के ख़िलाफ़ बोलने लगती है। 'दीवार, बच्चा और बरसात' कहानी के जुमले इसका गवाह है। " इस पढ़ाई निगोडी ने औरतों का कर म धर म तो सब डुबो दिया।" (6)

शराबी पति को घर से निकालने पर पूरा समाज पत्नी को नफ़रत की नजर से देखने लगा। यह 'गुलाबी' का तजुर्बा है, जो ' रानी मां का चबूतरा '. कहानी की नारी किरदार है। शराबी को घर में सजाना, उससे मारपीट खाना, रोना, सहना, फिर खमोश हो जाना यही आदर्श नारी की खूबियां हैं तो हिन्दुस्तान की कोई भी औरत आदर्श नारी नहीं बनाना चाहेगी।

पति बीमार है, इसलिए जिस्मी ज़रूरतें बिल्कुल अधूरा बन जाती हैं। जिस्मी ज़रूरतो के पूरेपन केलिए किरायेदार से दोस्ती फिर यौन संबंध रखनेवाली 'दर्शाना देवी का चित्रण ' तीन निगाहों का एक तस्वीर ' में किया गया है। लेकिन अपने किए पर उसको नदमत होती है। कहानीकार द्वारा नदमात कराना परंपरावादी का लक्षण है। नारीवादी नादमत की जगह दर्शाना देवी की तारीफ ही करेगी। क्योंकि जिन्स एक जिज्मी ज़रूरत है।

शादी औरत और मर्द को जिंसी रिश्ता जोड़ने का व पीढ़ी को बनाये रखने का एक पारिवारिक-सामाजिक लाइसेंस है। पति पत्नी के बीच कोई झगडा ना हो मगर जिंसी तरब ना मिले तो ज़िन्दगी बेकार हो जाएगी। 'स्वामी' यह दिखने वाली रचना है। पति वैष्णव भक्त है, भोग में भरोसा नहीं है , तो पत्नी मिनी अपने महबूब की तरफ़ मुड जाती है। परंपरावादी इसे नहीं मानेंगे। लेकिन नारी वादी केलिए यह गुनाह की बात नहीं है, खबर तक की बात नहीं है, क्योंकि पीढ़ी दर पीढ़ी से लेकर परंपराओं से लेकर यह बात मर्द करता हुआ आया है तो यह क्यों औरत के लिए परहेज है ?

मर्द और औरत जब पति पत्नी बन जाते हैं तब दोनों प्यारी दुश्मन बन जाते हैं लेकिन जब औरत और औरत सास बहू बन जाती है तब दोनों जानी दुश्मन बन जाती है इसके मतलब का शोध करने की कोई जरूरत नहीं है। औरत का दुश्मन घर और बाहर औरत ही है। भारतीय पारिवारिक परंपरा में सांस का जो स्थान है वह अत्यंत महत्वपूर्ण है और सास श्रद्धा का पात्र है और वह प्यार, ममता, वात्सल्य आदि सद्गुण भावनाओं की मूर्ति है।

लोकगीतों में सास हौआ है। सास अपने घर केलिए मेहरबान है तो बहू केलिए हौआ है। बाहरी घर की बेटी हमारे घर पहुंचते ही अपनी बेटी बन जानी चाहिए। सास इस्केलिए रोड़ा बन जाती है। बेटे पर अपना जो हक है, वह खो जाने का डर हर सास के भीतर पैदा हो जाता है। अपनी मर्ज़ी बे मर्ज़ी के मुताबिक जीनेवाले बेटे पर बहु का हक सास कभी सबर नहीं कर पायेगी। फिर घर में महाभारत पैदा हो जाएगा।

लेकिन बहू से बेटी से भी प्यार करनेवाली सास भी परिवारों में मौजूद है। अपने घर आनेवाली बहू को अपने रवैया समझा कर उसके मुताबिक व्यवहार करने केलिए प्रेरणा देनेवाली सास भी कुछ न कुछ परिवारों में मौजूद है। मन्नू जी की ' कील और कसक ' की सास इस तरह की कड़ी में आनेवाली सास है।

पुराने ज़माने में कभी-कभी सास ससुर से बहू को शारीरिक पीड़ायें सहनी पड़ती हैं। लड़की के लिए शादी एक हद तक मायके से नाता तोड़ने के समान है। बहू को फिर अपने घर जाने का मौका बेटी काम ही मिल जाता है। इसलिए पति के घर वालों को बहू के ऊपर पूरा हक मिलता है। इसलिए बहू को सब कुछ सहन करना पड़ता है।' नशा ' कहानी की ' आनंदी ' की हालत इससे बिल्कुल भिन्न नहीं है। " .....तो ऐसे नोचती कि मांस निकल आता। किसी काम में कसर रह जाती तो सास ऐसे लतियाती की वह औंधे मुंह गिरकर तड़फड़ाने लगती। " (7)

रिश्ता संभालने में व्यवहार ही अहम मुद्दा है। व्यवहार दो सर वाला तीखा तलवार है। इससे बहू ही नहीं सास भी घायल हो जाती है। पीढ़ियों का अंतर व परंपरागत रूढ़ियों का बंधन से ही सास बहू के बीच के झगड़े का सबब बन जाता है। लेकिन तालीम हासिल शुदा सास बहू के बीच में झगड़ा क्यों और कैसे पैदा हो जाता है। पीढ़ियों का अंतर और परंपरागत रूढ़ियों का कारण ही सास बहु का संघर्ष नहीं है। यह अपने अधिकार का प्रश्न है, अपने हक का सवाल है। अपने बेटे पर अपना हक खोने का और बहू का हक आने का संघर्ष है , झगड़ा है। इसलिए ही तालीम हासिल शुदा औरत भी आपस में इसी अधिकार के लिए लड़ती है। पीढ़ियों व परंप राओं को कोसने से कोई फायदा नहीं है। अधिकार सबसे बड़ा नशा है। यह सास से पूछो, बहू से पूछो, राजनैतिक अगुओं से पूछो , लोग सब अधिकार अपने नियंत्रण रखना चाहते है।

मन्नू जी कहती है कि सिर्फ प्रगतिशील विचारधारा में पले बढ़ने से भी परंपरा को छोड़ने के लिए कुछ मां-बाप समाज में तैयार नहीं हो जाते हैं। शहर में रहने वाले, आधुनिक तालीम से करीब का रिश्ता रखने वाले, प्रगतिशील विचारधारा के मां-बाप भी अपनी लड़कियों की शादी कम उमर में करवा कर अपने फर्जों से, जिम्मेदारियों से रिहाई पाना चाहते हैं। इसलिए छोटी उम्र में लड़कियों की ब्याह कराई जाती है। मन्नू जी की ' इनकम टैक्स और नींद ' कहानी में होमियो डॉक्टर दयाल और उसकी पत्नी रामेश्वरी दोनों प्रगतिशील विचारधारा के हमसफर हैं, शहरी माहौल में जीने वाले हैं , लेकिन जब अपनी बेटी सरोजा की बात आ जाती है तो उसकी शादी कराई जाती है। वे

मेट्रिक के बाद उसे घर ए सास भेजना चाहते है। वे अपनी बेटी को घर संभालने और खाना पकाने की तालीम ही देते थे। " .....अब तो ससुराल की भेजेंगे ..... लड़की चाहे कुछ भी बन जाए पर घर- गृहस्थी का काम तो उसकी सबसे बड़ी विशेषता है, सबसे बड़ा गुण है। " (8) प्रगतिशील विचारधारा को अपनाने वाले कामकाजी औरत भी अपनी बेटी को तालीम देकर उसे अपनी गुजरी हुई राह पर बढ़ाने में हिचकती है। औरत के लिए लडाई औरत करनी चाहिए अपने घर में भी। इसके बदले पढ़ी लिखी औरत भी परंपरा को पकड़कर खुद औरत के लिए रोड़ा बन जाती है।

प्रेम एक आदर्श व त्याग भावना है या व्यवहारिक भावना है ? दोनों हो सकते हैं किसी के लिए त्याग एवं आदर्शमयी भावना तो होगी तो और किसी के लिए वह व्यावहारिक भावना ही होगी। 'चश्मे' कहानी में प्यार की आदर्शमयी भावना को मन्नू जी ने इजहार किया है " फांसी पाए हुए कैदी से एक लड़की ने शादी कर ली है " (9) यह खबर नारी की आदर्श प्रेम भावना की तीखी मिसाल है। प्रेम आदर्श होने के कारण ही उस लड़की ने उससे शादी कर ली है। व्यावहारिक है तो वह प्यार से ज़रूर पीछे हटेगी। सवाल तब उठता है कि जिंदगी में प्रेम के व्यावहारिक पक्ष को आत्मसात करना है या आदर्श पक्ष को ,? यह एक बहुत बड़ा जलता सवाल है। इसका जवाब प्यार करने वाली नारी के दिल के मुताबिक ही होगा। जो भी हो प्यार के बारे में यह भी कहा जाता है कि मर्द का प्यार हरजाई है तो औरत का एकजाई है। कभी कभी औरत का प्यार भी हरजाई सा दिखाई देता है। जिस के लिए प्यार मनोरंजन की चीज है, वह हरजाई ही होगा।

मन्नू जी की 'एक प्लेट सैलाब' में औरत के प्यार को हरजाई की तरह चित्रित किया गया है। औरत घर टूट जाने के डर से अपने आदर्श प्रेम से पीछे हटती है। दिल कमज़ोर हो जाने पर प्यार टूट जाएगा। 'एक कमज़ोर लड़की' की कहानी में यही बताई गई है।'जंग और मुहब्बत' में कुछ भी हो सकता है तो मुहब्बत की पाक नापाक पर बहस करना बेकार है। मुहब्बत में काम है या नहीं ? यह सवालो बहस भी बेकार है क्योंकि जिस्म के बिना विकार का कोई महत्व नहीं है। वेदों ने प्रेम में काम को मान लिया है।

हर मर्द की तरह औरत के भी अनगिनत चेहरे होते है। वक्त के बदलाव के साथ मर्द और औरत में भी बड़ा परिवर्तन आता जाता रहता है। किसी भी परिभाषा के अंदर मर्द और औरत की भावनाओं को बांध कर कुछ भी आंका नहीं जा सकता। क्योंकि भावनाएं व्यक्ति सापेक्ष है। सामाजिक ज़िंदगी के अलावा हर मर्द और औरत को एक मनोवैज्ञानिक ज़िन्दगी भी है। सामाजिक बे आसूदागी की बातों का साक्षात्कार मनोवैज्ञानिक ज़िंदगी में साकार हो उठता है।

सन्दर्भ सूची

1. सुभाष सोनिया : स्त्री समीक्षा केप्रश्न, पृ 10
2. आजकल विशेषांक, प्रेम भवन मार्च 2009
3. मन्नू भण्डारी : संपूर्णक हानियाँ, पृ.167
4. मन्नू भण्डारी : आप का बंटी, पृ 23
5. मन्नू भण्डारी : संपूर्णक हानियाँ, पृ.191
6. मन्नू भण्डारी : संपूर्णक हानियाँ, पृ .84
7. मन्नू भण्डारी : संपूर्णक हानियाँ, पृ. 165
8. मन्नू भण्डारी : संपूर्णक हानियाँ, पृ 203
9. आजकल प्रेम विशेषांक मार्च 2009